प्रमुख सचिव, जल संसाधन, उ.प्र. शासन द्वारा परासई सिंध जल समेट का भ्रमण

झांसी, 28 अक्टूबर,2017

कृषि प्रधान देश भारत में किसानों की गिरती आर्थिक दशा से भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश शासन दोनों ही चिन्तित हैं और कृषकों की आय शीघ्र दुगुनी करने के लिए प्रयासरत हैं। इसी क्रम में प्रमुख सचिव, सिंचाई एवं जल संसाधन, उ.प्र. सरकार ने झांसी स्थित परासई–सिंध जलसमेट का भ्रमण 28 अक्टूबर, 2017 को जिले के जिला अधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी एवं अन्य आला अधिकारियों के साथ किया और वस्तु स्थिति का अवलोकन किया। बुंदेलखण्ड अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण प्रायः सूखे की चपेट में रहता है। सीमित भूजल स्तर तथा यहां की पठारी ढलवां भूमि की जलधारण क्षमता कम होने के कारण कृषि उत्पादकता राज्य के अन्य हिस्सों की अपेक्षा कम है। वर्तमान में वर्षा जल में कमी पलायन का प्रमुख कारण बनी है। जिससे सभी चिन्तित हैं और इससे निपटने के कारगर उपाय ढूढ़ रहे हैं। क्षेत्र में पिछले तीन वर्षों से लगातार वर्षा औसत से कम हो रही है। इसके बावजूद परासई–सिंध जलसमेट में खेती के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध है और खेती की स्थिति अन्य गॉवों की तुलना में काफी अच्छी है। इस जलसमेट का कुल क्षेत्रफल 1246 हे. है तथा इसमें दो ग्राम सभाओं (परासई, बछौनी) के तीन गॉव (परासई, छतपुर, बछौनी) आते हैं। जलसमेट क्षेत्र में कुल 417 परिवार हैं जिसमें से 18 परिवारों को छोड़कर शेष सभी भूमिधर हैं। इस जलसमेट का विकास वर्ष 2012–15 में केन्द्रिय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झॉसी द्वारा किया गया जिसमें इक्रीसेट हैदराबाद का भी सहायोग प्राप्त हुआ। जलसमेट से निकलने वाले नालों पर 9 चेकडैम तथा 3 गली प्लग बनाये गये। एक हवेली संरचना की मरम्मत की गयी और उसका जल निकास द्वार ठीक किया गया। एक खेत तालाब तथा एक सामुदायिक तालाब बनवाया गया। तालाब की मिट्टी से खेतों की ओर जाने वाले रास्ते ठीक किये गये। 50 हे. क्षेत्रफल में मेड़बन्दी की गयी। परिणाम स्वरूप कुँओं का जलस्तर 2–6 मी. ऊपर आ गया। सतही जल भण्डारण की अवधि 2–6 महीने बढ़ गयी। फसल उत्पादकता बढ़ाने के लिए विभिन्न फसल प्रजातियों के 265 प्रदर्शन आयोजित किये गये। तकनीकी ज्ञान जनसाधारण तक पहुॅचाने के लिए प्रक्षेत्र दिवस, किसन मेला, वन महोत्सव आदि का नियमित आयोजन किया गया। पर्यावरणीय दशायें सुधारने तथा कृषि आय को सतत् बनाने के लिए कृषिवानिकी के अन्तर्गत 10,000 से अधिक पौधों की रोपण गृह वाटिका, फसल क्षेत्र तथा मेड़ों पर किया गया। दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए मेड़ों पर गिनी घास, नैपियर बाजरा हाइब्रिड का रोपण किया गया। भूमिहीन परिवारों की आय सुनिश्चित करने के लिए कागज के दोने बनाने की दो मशीनें उपलब्ध करायी गयीं। विविध प्रयासों के परिणामस्वरूप फसलोत्पादन में 20–70% की वृद्धि अंकित की गयी। लगभग 126 हे. पडती भूमि में नियमित कृषि कार्य होने लगा। पेयजल समस्या का पूर्ण निराकरण हो गया। सिंचाई में लगने वाले खर्च में 6–8 हजार प्रति हे. की बचत हुई और पलायन स्वतः रूक गया। मजदूरों को गॉव में ही रोजगार उपलब्ध हो गया। दुग्ध उत्पादन 0.5–1.0 लीटर प्रति गाय/भैंस प्रतिदिन बढ़ गया। किसानों की आय बढ़ गयी, स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति बढ़ गयी। यहॉ तक कि कई किसान परिवारों के बच्चे शहर (30 किमी. दूर) में पढ़ने आने लगे। फल तथा इमारती लकड़ी वाले पौधे लगने से स्वास्थ्य एवं पर्यावरण हरा–भरा हो गया।

प्रमुख सचिव महोदय ने अधिकारियों के साथ नाले पर बने चेकडैम का भ्रमण किया और इस सूखे में नालों में उपलब्ध पानी देखकर आह्लादित हुए। किसानों से इसकी उपयोगिता के बारे में जानकारी ली तत्पश्चात् सभी लोग हवेली संरचना पर गये जहॉ खेती की हवेली पद्धती की जानकारी लिया। श्री विजय कुशवाहा के प्रक्षेत्र पर कुओं के जल स्तर का निरीक्षण किया। श्री विजय छोटी जोत के किसान हैं फिर भी उन्होंने एक एकड़ में अमरूद, नीबू के पौधे लगाकर उनके बीच सब्जी की खेती (खरीफ तथा जायद में) और गेहूं की खेती रबी में करके अपने परिवार का जीवन निर्वाह अच्छे से कर रहे हैं। परियोजना पूर्व श्री विजय की कुल वार्षिक आमदनी मात्र 20,000 रू. प्रति वर्ष थी जो अब बढ़कर 3 वर्षों में ही रू. 56,000 प्रति वर्ष हो गयी है। श्री विजय कुशवाहा के प्रक्षेत्र के पश्चात् प्रमुख सचिव महोदय ने सामुदायिक तालाब का निरीक्षण किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झॉसी के वैज्ञानिकों के दल ने परियोजना की लागत–लाभ की जानकारी देते हुए बताया कि परियोजना कि कुल लागत 90 लाख रूपया(रू. 7220 प्रति हे.) आयी है। संस्थान द्वारा सघन डेटा मानिटरिंग की जा रही है। संस्थान के आंकलन के अनुसार जलसमेट में प्रतिवर्ष प्रत्यक्ष अतिरिक्त लाभ रू 346 लाख (प्रति परिवार औसत शुद्ध आय वृद्धि रू. 83000 प्रति वर्ष) है। प्रमुख सचिव ने एक अन्य कृषक श्री महेन्द्र सिंह यादव के प्रक्षेत्र का भी भ्रमण किया जो जलसमेट के ऊपरी भाग में स्थित है। श्री महेन्द्र सिंह ने 0.8 एकड़ क्षेत्रफल में अमरूद आधारित कृषिवानिकी, 0.8 एकड़ में नींबू आधारित तथा 1.5 एकड़ में सागौन आधारित कृषिवानिकी तकनीक अपनायी है। मेड़ों पर गिनी घास तथा सीमा पर कुमट की सजीव बाड़ लगाकर खेतों को सुरक्षित किया है। श्री यादव पेड़ों के साथ मूॅगफली तथा गेहूं की खेती करते हैं। मेड़ों से वर्ष भर हरा चारा उपलब्ध रहता है। श्री महेन्द्र की वार्षिक आमदनी में गत तीन वर्षों में 3 गुना वृद्धि हुई है। अमरूद से उत्पादन मिलना इस वर्ष से शुरू हो जायेगा। पेड़ के रूप में उपलब्ध परिसम्पत्तियों का मूल्यांकन किया जाये तो श्री महेन्द्र की आर्थिक स्थिति छोटी जोत के बावजूद बहुत अच्छी हो गयी है।

प्रमुख सचिव महोदय जल समेट के प्रकृतिक संसाधनों की स्थिति से बहुत अधिक प्रभावित हुए। किसानों की संतुष्टि स्वतः उनकी बढ़ी आमदनी की गवाही दे रही थी। महोदय ने केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी द्वारा विकसित इस मॉडल को जन–जन तक पहुँचाने की मंशा जाहिर किया।